दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सिविल लाइन्स, गोरखपुर–273001

सम्बद्ध : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दिगंत

ई-पत्रिका:अगस्त-2022

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'अ' श्रेणी में वर्गीकृत

Website : www.dnpgcollege.edu.in **Helplin Email** : dnpgonline@gmail.com

Offiical Email :dnpggkp@gmail.com **Contact Number** : 0551-2334549

or Social App links (Click one icon) :

दिगंत-ई-पत्रिका:अगस्त-2022

संरक्षक मण्डल

परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज

मुख्य संरक्षक

प्रो.उदय प्रताप सिंह

अध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर

श्री प्रमोद कुमार चौधरी

उपाध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर

सम्पादक मण्डल

प्रो. ओम प्रकाश सिंह,प्राचार्य

प्रधान सम्पादक

1. **डॉ. सुभाष चन्द्र,** सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग
2. **डॉ. विभा सिंह,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
3. **डॉ. प्रियंका सिंह,** सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
4. **श्री अश्वनी कुमार श्रीवास्तव,** तकनीकी सहायक

August-2022

कार्यक्रम विवरण-

क्र.सं.	दिनांक एवं दिन	विभाग का नाम	कार्यक्रम का नाम	पेज नं.
1.	05.08.2022 शुक्रवार	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग	विशिष्ट व्याख्यान	1
2.	11.08.2022 वृहस्पतिवार	महाविद्यालय	आजादी का अमृत महोत्सव सप्ताह कार्यक्रम	2
3.	12.08.2022 शुक्रवार	राष्ट्रीय सेवा योजना	पौधरोपण कार्यक्रम	2
4.	13.08.2022 शनिवार	महाविद्यालय	हर घर तिरंगा कार्यक्रम	3
5.	14.08.2022 रविवार	सांस्कृतिक प्रकोष्ठ	ओजपूर्ण कवि गोष्ठी प्रतियोगिता	4
6.	15.08.2022 शनिवार	महाविद्यालय	स्वतंत्रता दिवस समारोह	4—5
7.	16.08.2022 रविवार	सांस्कृतिक प्रकोष्ठ एवं रोवर्स / रेंजर्स	रंगोली प्रतियोगिता	6
8.	17.08.2022 सोमवार	सांस्कृतिक प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना	पोस्टर प्रतियोगिता	6—7
9.	22.08.2022 सोमवार	महाविद्यालय	गिद्ध संरक्षण कार्यक्रम	7—8
10.	25.08.2022 वृहस्पतिवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के उद्घाटन कार्यक्रम	8—9
11.	26.08.2022 शुक्रवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का द्वितीय दिवस	9—10
12.	26.08.2022 शुक्रवार	महाविद्यालय	प्रो.डी.पी. सिंह पूर्व चेयरमैन, यू.जी.सी. द्वारा महाविद्यालय का निरीक्षण	10
13.	27.08.2022 शनिवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का तृतीय दिवस	11—12
14.	28.08.2022 रविवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का चतुर्थ दिवस	12—13
15.	29.08.2022 सोमवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का पंचम दिवस	13—14
16.	30.08.2022 मंगलवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का छठवें दिवस	14—15
17.	31.08.2022 बुधवार	महाविद्यालय	युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का समापन	15—16

August-2022

'नो फर्स्ट यूज' भारत की परमाणु नीति का अखण्ड भाग है-प्रो. श्याम कुमार सिंह

दिनांक अगस्त को महाविद्यालय में रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा **हिरोशिमा नागासाकी जनसंहार : 'भारतीय सुरक्षा एवं रणनीतिक विकल्प' विषय पर हिरोशिमा दिवस की पूर्व संध्या पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. श्याम कुमार सिंह प्राचार्य, पवित्रा डिग्री कालेज, मानीराम, गोरखपुर**थे। **मुख्य अतिथि**ने अपने उद्बोधन में कहा द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दौर में 06 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के नागासाकी शहर पर विश्व का पहला परमाणु बम गिराया जिसमें लाखों लोगों की मृत्यु हो गई तथा कई पीढ़ियों तक उसका दुष्परिणाम नागासाकी के लोग झेलते रहे। इसके बाद सोवियत संघ ने 1949 में, ब्रिटेन ने 1952 में, फ्रांस ने 1960 में तथा चीन ने 1964 में परमाणु परीक्षण कर लिए, जिससे परमाणु भयादोहन की स्थिति उत्पन्न हो गई। 1998 में भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण कर खुद को परमाणु संपन्न देश घोषित किया और किसी भी देश पर चाहे वह परमाणु संपन्न हो या ना हो **'पहले परमाणु शस्त्र का प्रयोग न'** करने की घोषणा की। लेकिन परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था में भारत के समक्ष उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर भारत को अपने इस नाभिकीय सिद्धान्त पर पुनः विचार करने की आवश्यकता महसूस हो रही है।

अपने **अध्यक्षीय उद्बोधन मेंमहाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह** ने कहां की द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान पर बदले की भावना से परमाणु बमों का प्रयोग किया। विश्व में जापानी और इजराइली ही ऐसे हैं जो राष्ट्रीय चरित्र को प्राथमिकता देते है ।

August 2022

आजादी का अमृत महोत्सव साप्ताहिक कार्यक्रम

दिनांक 11 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव साप्ताहिक कार्यक्रम के प्रथम दिन निबंध एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संजय कुमार राव, (बी.एड. द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान रोशनी गुप्ता, (बी.ए. द्वितीय वर्ष) तृतीय स्थान पर श्री सर्वेश्वर सिंह, (बी.एड. द्वितीय वर्ष) ने प्राप्त किया।

स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रोशनी गुप्ता, (बी.ए. द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान चंद्रकेश साहनी, (बी.ए. द्वितीय वर्ष) तथा तृतीय स्थान श्री संजय कुमार राव, (बी.एड. द्वितीय वर्ष) ने प्राप्त किया। कार्यक्रम सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की डॉ. रुक्मिणी चौधरी की देखरेख में संपन्न हुआ।

पौधा रोपण कार्यक्रम

दिनांक 12 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत पौधारोपण का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं के द्वारा आम, अमरूद एवं अन्य पौधे लगाये गये। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह एवं मुख्य नियंता प्रोफ़ेसर धीरेन्द्र सिंह द्वारा भी पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. चण्डी प्रसाद पाण्डेय ने किया।

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत हर घर तिरंगा हेतु जनजागरूकता प्रभात फेरी का आयोजन

महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव सप्ताह कार्यक्रम के अन्तर्गत 'हर घर तिरंगा' जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 13 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में महाविद्यालय के पूर्वी परिसर से हर घर तिरंगा जनजागरूकता हेतु प्रभात फेरी महाविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो. धीरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में निकली जो महाविद्यालय से इन्दिरा बाल विहार होते हुए चेतना तिराहे से कचहरी चौराहे से होकर हरिओम नगर होते हुए महाविद्यालय में वापस आकर एक सभा के रूप में तबदील हो गयी। इस अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम की संयोजक प्रो. अर्चना सिंह जी ने प्रभात फेरी में प्रतिभाग किये हुए छात्र/छात्राओं को शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने छात्र/छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। हम विविध कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए आजादी के गौरवशाली इतिहास और उसे प्राप्त करने में दी गयी अतुलनीय शहादत को स्मरण कर रहें है। इसी श्रृखंला में हर घर तिरंगा कार्यक्रम एक राष्ट्रव्यापी अभियान का स्वरूप ले चुका है।

ओजपूर्ण कवि गोष्ठी प्रतियोगिता

दिनांक 14 अगस्त 2022 को **महाविद्यालय के** सांस्कृतिक प्रकोष्ठ द्वारा **आजादी के अमृत महोत्सव** के अंतर्गत 'ओजपूर्ण कवि गोष्ठी **प्रतियोगिता**' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सन् 1965 में हुए भारत एवं पाकिस्तान के बीच युद्ध पर आधारित एक डाक्यूमेण्ट्री का भी प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की प्रभारी प्रो. अर्चना सिंह ने तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमलेश कुमार मौर्य ने किया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त, 2022 को महाविद्यालय में 76वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह ध्वजारोहण के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के उपरान्त उच्च शिक्षा निदेशक उत्तर प्रदेश के संदेश वाचन भी किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव समारोह के अन्तर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ गणेश वन्दना नृत्य के साथ साक्षी गुप्ता ने किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत आई.क्यू.ए.सी. के समन्वयक प्रो. परीक्षित सिंह ने सभी का स्वागत किया एवं कार्यक्रम के विशेष सन्दर्भ में प्रकाश डाला। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. भगवान सिंह ने कहा कि सन् 1857 से 1947 के बीच 90 वर्षो का आन्दोलन क्रान्तिकारियों के वीरता की यश गाथा हैं। भारतीय राष्ट्रवाद के तीर्थस्थल चौरी–चौरा व हल्दीघाटी हमारे अन्दर राष्ट्रीय चेतना को बल प्रदान करते है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि शिक्षा, संस्कृति व राष्ट्रवाद की धारा आगे बढ़ाने के लिए महाविद्यालय संकल्पित है। युवा कोई अवस्थाबोधक अवधारणा नहीं है, बल्कि जिस व्यक्ति के आँखों में अतीत का वैभव, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य की चिन्ता हो, वही युवा हैं।

August-2022

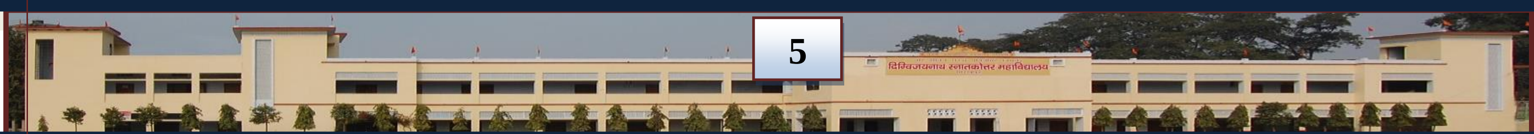

रंगोली प्रतियोगिता

दिनांक को 16 अगस्त 2022 को **महाविद्यालय** में **आजादी के अमृत महोत्सव** के अंतर्गत सांस्कृतिक प्रकोष्ठ एवं **रोवर्स/रेंजर्स के तत्वाधान में रंगोली प्रतियोगिता** का आयोजन हुआ, जिसमें महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चांदनी सिंह व प्रिया धर दुबे, द्वितीय स्थान आस्था कन्नौजिया व अंकुश विश्वकर्मा तथा तृतीय स्थान पर सोनाली अग्रवाल की टीम रही।

पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

दिनांक 17 अगस्त 2022 को **महाविद्यालय** में **आजादी के अमृत महोत्सव** के अंतर्गत **सांस्कृतिक प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान** में **पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में 15 छात्राओं ने पोस्टर मेकिंग करके प्रतिभाग किया।

प्रथम स्थान अनु श्री सिंह, (बी.काम.तृतीय सेमेस्टर) द्वितीय स्थान पर संयुक्त रूप से कामिनी निषाद एवं रोशनी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) तथा तृतीय स्थान प्रीति सिंह (बी.काम. तृतीय सेमेस्टर) रहीं एवं सांत्वना पुरस्कार साहिबा रहमान एम.काम.तृतीय सेमेस्टर ने प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागी एवं स्थान प्राप्त किये हुए छात्राओं को **प्रो. अर्चना सिंह, संयोजक, सास्कृतिक प्रकोष्ठ** ने शुभकामनाएं एवं अपना आर्शीवचन प्रदान किया।

गिद्ध संरक्षण संवाद कार्यक्रम

22 अगस्त, 2022 को महाविद्यालय में **'गिद्ध संरक्षण' संवाद– 2022 उत्तर प्रदेश सरकार के अभिनव प्रयास 'वन्यजीव संरक्षण परक इको टूरिज्म के क्षेत्र में आजीविका के अवसर' विषय पर** व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें **मुख्य अतिथि के.पी.दूबे, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव उत्तर प्रदेश, लखनऊ**थे।

मुख्य वक्ता डॉ. विभु प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं उप निदेशक बीएनएचएस, मुम्बई तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति में व्यक्ति और प्रकृति एक दूसरे के सहयोगी रहे है। प्रकृति में व्याप्त जीव, पशु–पक्षी समाज के लिए अपना योगदान देते है। पूरे सृष्टि में आतंकवाद का पहला शिकार पक्षीराज जटायु थे। भारत की सनातन संस्कृति वन्यजीवों से लेकर प्रकृति के सभी जीवों के संरक्षण की व्यवस्था से जुड़ी रही है। **कार्यक्रम का आयोजन आई.क्यू.ए.सी. दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,**

गोरखपुर एवं गोरखपुर वन प्रभाग रहा के तत्वावधान में हुआ। जिसमें बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी एवं हेरिटेज फाउंडेशन गोरखपुर का विशेष सहयोग रहा।

युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी की स्मृति व्याख्यानमाला का उद्घाटन

दिनांक 25 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में**महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि पर ज्ञान, विज्ञान व समरसता की गंगा बहाने वाले युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। व्याख्यान माला के उद्घाटन अवसर पर ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हमारी ज्ञान विरासत'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. राजेश सिंह, कुलपति, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, थे।** मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 350 महाविद्यालयों में दिग्विजयनाथ पी.जी.कालेज, गोरखपुर हमेशा नं. 1 पर रहा है। महन्त दिग्विजयनाथ जी मात्र संत ही नही बल्कि शिक्षा के प्रति समर्पित, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सामाजिक सरोकारों के प्रति अग्रणी रहे है। विश्वविद्यालय ने इस महाविद्यालय से भौतिक और सांस्कृतिक विरासत को प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय की स्थापना में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् और महन्त दिग्विजयनाथ जी का विशेष योगदान रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि शिक्षा, संस्कृति व राष्ट्रीयता की त्रिवेणी के संकल्प के साथ स्थापित यह महाविद्यालय अपने भगीरथ महन्त दिग्विजयनाथ जी की स्मृति के उपलक्ष्य में व्याख्यानमाला का आयोजन कर रहा है। शैक्षिक मरूभूमि में ज्ञान गंगा प्रवाहित करने के लिए आधुनिक भगीरथ महन्त दिग्विजयनाथ जी ने शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए व्यक्ति केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया, जिससे जीवन संग्राम में सफल होने के लिए नागरिक तैयार हों, उस दिशा में महाविद्यालय निरन्तर प्रयासरत है।

<u>व्याख्यानमाला का द्वितीय दिवस</u>

दिनांक 26 अगस्त 2022 को महंत दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के द्वितीय दिवस पर ज्ञान लोकतंत्र और विकास' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. हरिकेश सिंह पूर्व कुलपति जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा बिहार थे। उन्होने लोकतंत्र की चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय लोकतंत्र एवं यूरोपीय लोकतंत्र दोनों विपरीतार्थक है। पश्चिमी लोकतंत्र के विपरीत भारतीय 'लोकतंत्र वसुधैव कुटुंम्बकम' की धारणा पर अधारित है,

जहां वृहद चेतना में समता, भ्रातृत्व न्याय एवं स्वतंत्रता का आविर्भाव होता है। भारत कल्याण एवं भद्रता का भव्य भारत है जो निर्जीव व सजीव सबके साथ समभाव रखता है, जिसकी आत्मा लोकचेतना में अन्तर्निहित है। वास्तव में दुनिया में मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि लोकतंत्र है और लोगों की आकांक्षाओं का जो समुच्चय है वही संविधान है। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि हम स्वामी विवेकानन्द के वेदान्तिक समाजवाद के अनुयायी है। आधुनिक लोकतंत्र की संकल्पना भारत के लिए नया नहीं है बल्कि हमारे आध्यात्मिक परंपरा में लोकहित व लोकमंगल का संयुक्त संकल्पना ही लोकतंत्र है।

महाविद्यालय का निरीक्षण

दिनांक 26 अगस्त 2022 को माननीय मुख्यमंत्री महोदय के शिक्षा सलाहकार प्रो. डी.पी. सिंह, पूर्व चेयरमैन यू.जी.सी. एवं डॉ. ज्ञानेन्द्र नाथ सिंह, पूर्व ड्रग कन्ट्रोलर, भारत सरकार द्वारा महाविद्यालय परिसर व संसाधन–व्याख्यान कक्षों, प्रयोगशाला, विभाग एवं पुस्तकालय, हारबेरियम, हर्बल–गार्डेन आदि का निरीक्षण किया गया एवं महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये।

इस अवसर पर निरीक्षण के दौरान महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रमथनाथ मिश्र, प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह, आई.क्यू.ए.सी. कोआर्डिनेटरप्रो. परीक्षित सिंह, डॉ. आर.पी. यादव, कार्यालय अधीक्षक श्री संतोष कुमार त्रिपाठी, डॉ. अंकित सिंह आदि उपस्थित रहे।

August 2022

व्याख्यानमाला का तृतीय दिवस

दिनांक 27 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में महंत दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के तृतीय दिवस पर व्याख्यानका आयोजन किया गया जिसका विषय था 'भाषा, संस्कृति एवं समाज'। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. संजीव राय, शैक्षिक सलाहकार एवं शिक्षाविद्, नई दिल्ली थे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि भाषा, संस्कृति की मौखिक अभिव्यक्ति है। संस्कृति से ही देश के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है कि जिनके सहारे वह अपने आदर्शों व जीवन मूल्यों का निर्धारण करता है। हमारे पास जो सांस्कृतिक विरासत मौजूद है वह सर्वोत्कृष्ट है। यदि हम बाहर की संस्कृति से कुछ सीखते हैं तो वह संस्कृति भी हमसे सीखती है। भाषा व सांस्कृतिक विविधताओं के बाद भी लोग एक दूसरे के भीतर सम्बन्धों के पुल बनाते हैं। हमारे जीवन में लोक भाषा का बड़ा ही महत्व है। लोक भाषा में होने के कारण ही श्रीरामचरितमानस को इतनी ख्याति मिली।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओम प्रकाश सिंह ने किया उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति मानव समुदाय को जोड़ने का एक सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम होने के साथ ही संस्कृति की संवाहक भी होती है। भाषा ही मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है और भाषा के सहयोग से ही समाज का निर्माण होता है, जिससे शिक्षित समाज का विकास व नवनिर्माण सम्भव है। भौगोलिक, सांस्कृतिक और व्यवहारपरक विभिन्नता के कारण भाषा का प्रयोग भी सीमित व विशिष्ट होता है। भारतीय संस्कृति सर्वाधिक सम्पन्न और समृद्ध है तथा अनेकता में एकता ही इसकी मूल पहचान है। हमारा यह पूरा परिक्षेत्र बुद्ध के विचारों से प्रभावित

August-2022

है, सिद्धार्थ को दुनिया के सारे संसाधन जब तक उपलब्ध थे तब तक समाज ने उन्हें आदर्श नहीं माना परन्तु जब सबकुछ त्यागकर आये तो समाज में बुद्ध के रूप में प्रतिस्थापित हुए। किसी समुदाय के आचरण की आदर्श संस्कृति ही हमारी पहचान बनती है।

व्याख्यानमाला का चतुर्थ दिवस

28 अगस्त, 2022 महाविद्यालय में युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के चौथे दिन **"समाज व राष्ट्र के उत्थान में संत–समाज का योगदान"** विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. कमान सिंह, रसायन विज्ञान विभाग, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत के संत समाज एवं महापुरूषों ने सदियों से ही राष्ट्रीय एकता के निर्माण में अपना योगदान दिया है तथा मानव सभ्यता के विकास में संतों ने अहम भूमिका निभाई है, और समय–समय पर मानव इतिहास को नई दिशा भी दी है। उसी परिप्रेक्ष्य में गोरक्षपीठ का भी नाम है जिसका धर्म, समाज एवं राष्ट्र उत्थान के साथ राजनीति से भी गहरा रिश्ता है। अनादि काल से ही हमारा भारत वर्ष एक महान राष्ट्र के रूप में दुनिया में प्रसिद्ध रहा है। भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषताएँ हैं आत्मशुद्धि अर्थात् स्वयं के शुद्धिकरण और इसमें युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्र संत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विशेष योगदान रहा है।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि महन्तद्वय का पूरा जीवन राष्ट्र धर्म, समाज, संस्कृति, शिक्षा व समाज सेवा के माध्यम से लोक कल्यार्ण को समर्पित रहा है। सामजिक एकता और उत्थान के निमित्त आप दोनों का शैक्षिक जागरण पर सर्वाधिक जोर रहा है। उसी परम्परा के सम्वाहक वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी अपराधमुक्त एवं विकसित समाज के निर्माण में अपने को समर्पित किया है। उत्तर प्रदेश में अपराधमुक्त समाज के लिए जीरो टालरेन्स की नीति एवं मोदी जी के जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान एवं जय अनुसन्धान के उद्देश्य को पुरा करने के लिए बी.एससी. पास शोधार्थियों के लिए उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना के अन्तर्गत तीस हजार रुपये प्रति माह शोध–छात्रवृत्ति लागू की है। गन्ना किसानों और चीनी मिलों के उत्थान के लिए लगभग 50 लाख गन्ना किसानों को सरकार ने शेयर सर्टिफिकेट दिये हैं। इसके साथ ही गन्ने के परामर्श मूल्य में भी बढ़ोत्तरी की है। योगी सरकार के इन विशेष प्रयासों से आने वाले समय में भारत चीनी का पहला उत्पादक देश होगा।कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने किया।

व्याख्यान माला का पंचम दिवस

29 अगस्त, 2022 को महाविद्यालय में युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के पॉचवें दिन राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसका विषय था**"नाथपंथ, राष्ट्रचिन्तन एवं राष्ट्रनिर्माण'**। **कार्यक्रम के मुख्य अतिथि** डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि विभेद मुक्त समरस समाज की

स्थापना द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के स्वप्न को साकार करता नाथपंथ का दर्शन राष्ट्रनिर्माण के अनुष्ठान में परोक्ष/अपरोक्ष रूप से महती भूमिका निभा रहा है। इसी दिशा में चिन्तन करते हुए महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक पुनर्जागरण का शंखनाद किया। महायोगी गोरखनाथ पहले तपस्वी है, जिन्होने विशुद्ध योगी एवं तपस्वी होते हुए भी सामाजिक राष्ट्रीय चेतना का नेतृत्व किया। उनके बाद महन्त दिग्विजयनाथ, महन्त अवेद्यनाथ से होते हुए योगी आदित्यनाथ तक नाथपंथ की इस योगी परम्परा ने प्रत्येक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का मुखरता के साथ प्रतिकार किया। नाथपंथ की पराम्परा में विश्व का सर्वोच्च नाथपंथी केन्द्र गोरखनाथ मंदिर के कपाट सदैव सभी के लिए खुले रहते है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति समृद्ध रही है। विश्व में सिन्धु सभ्यता प्रथम नगरीय क्रान्ति की प्रतीक थी। जिसका विश्व के अनेक सभ्यताओं ने अनुकरण किया है। भारत कृषि, ऋषि एवं मनीषी परम्परा का वाहक है। विदेशी अक्रान्ताओं के प्रभाव से यह परम्परा खण्डित हुई और भारत ने सोने की चिड़िया का वैभव खो दिया। पुनः सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत हमारी संत परम्परा ने खोये हुए भारतीय वैभव को प्राप्त करने का प्रयास किया जिनमें स्वामी विवेकानन्द, सहजानन्द, महन्त दिग्विजयनाथ एवं नाथपंथी सिद्धों ने भारत के सांस्कृतिक गौरव को स्थापित किया। इस पंरम्परा के वाहक के रूप में गोरखनाथ सिद्धपीठ को देखा जा सकता है। भारतीय मनीषियों ने समाज के अन्दर लोक संस्कृति को जागृत करने का लक्ष्य बनाया जो राष्ट्र की स्वतन्त्रता का वाहक बना।

व्याख्यान माला के छठवें दिवस

30 अगस्त, 2022 को महाविद्यालय में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ स्मृति व्याख्यानमाला के छठे दिन विज्ञान संकाय द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसका विषय था"**भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं सांस्कृतिक**

August-2022

मूल्य बोध''। कार्यक्रम में**मुख्य अतिथि मेजर जनरल अतुल बाजपेयी कुलपति, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बालापार, गोरखपुर**थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति की संवाहक है। प्राचीन शिक्षा पद्धति भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह शिक्षा गुरुकुल के माध्यम से प्रदान की जाती थी जिसमें अभिजात्य वर्ग एवं कमजोर वर्ग दोनों को समान शिक्षा प्रदान की जाती थी। मध्यकाल में नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय ने प्राचीन शिक्षा पद्धति की निरंतरता को बनाए रखा। मुगल काल में भारतीय शिक्षा पद्धति का पतन हुआ और अंग्रेजी शासनकाल में प्राचीन शिक्षा पद्धति पतनोन्मुख होती चली गई जिसमें लॉर्ड मैकाले जैसे लोगों की अहम भूमिका रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो ओमप्रकाश सिंह ने शिक्षा के चार स्वरुप– संस्कार मूलक शिक्षा, विचार मूलक शिक्षा, रोज़गार मूलक शिक्षा एवं बाजार मूलक शिक्षा की बात कही जिसमें संस्कार मूलक शिक्षा के साथ साथ रोजगारपरक शिक्षा भी हमारी संस्थाएं दे रहीं हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि संस्कार मूलक शिक्षा से राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होगा और रोजगारपरक शिक्षा से राष्ट्र आत्मनिर्भर बनेगा।

सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

31 अगस्त, 2022महाविद्यालय मेंयुगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के समापन अवसर पर **''राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियाँ'' विषय पर**व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता श्री पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ राष्ट्रवादी विचारक व प्रवर्तक नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में कहा कि''अंग्रेजीउपनिवेश से भारत की स्वतन्त्रता मिली वह वास्तविक नहीं थी बल्कि अंग्रेजों और कांग्रेस के बीच एक ऐसा समझौता था जिसमें कुछ शर्तों के

साथ सत्ता का हस्तान्तरण हुआ है। कांग्रेस में भी आम जनमानस की दृष्टि में देश का नेतृत्व सरदार बल्लभ भाई पटेल को मिलना चाहिए लेकिन गॉधी जी के हस्तक्षेप के कारण जवाहर लाल नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्षबनाया गया और अंतरिम सरकार में प्रधानमंत्री बनाया गया। एक लम्बे कार्यकाल तक कांग्रेस शासित देश में चाटुकारों का बोलवाला रहा और उन्हीं के अनुसार भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास को अपने अनुसार लेखन किया गया।

कार्यक्रम में **मुख्य अतिथि प्रो. आर.एस.तोमर पूर्व विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि** हमारे राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। गुलामी के समय विदेशी आक्रांताओं ने इस पर आघात पहुँचाने का कुत्सित प्रयास किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के सांस्कृतिक, राष्ट्रवाद और स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदों की ओर लोटो की उक्ति पर जोर देते हुए कहा कि अपनी प्राचीन आध्यात्म, विज्ञान, कला, संस्कृति की परम्परा संमृद्ध रहा है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि सनातन वह है जो हमेशा अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखें सनातन धर्म की रक्षा के लिए हमेशा धर्म का पालन करना होगा इस राष्ट्र को विश्व में महाशक्ति बनाने के लिए स्वधर्म का पालन करना अनिवार्य है।